International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 01(I), January- March, 2025, pp. 33-38

भारतीय राजनीति में नैतिक अवमूल्यन : कारण व सुझाव

डॉ. सरोज सीरवी*

प्रस्तावना

भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला नैतिकता, ईमानदारी और जनसेवा के सिद्धान्तों पर रखी गयी थी। लेकिन समय के साथ राजनीति में नैतिक मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है। नैतिकता का अर्थ सत्य, ईमानदारी और जिम्मेदारी के साथ कर्तव्यों का पालन करना। आज के दौर में राजनीतिक नैतिकता की स्थिति चिंताजनक है, जहां सत्ता, धन और व्यक्तिगत लाभ के लिए नैतिक सिद्धांतों को दरकिनार किया जा रहा है। आज दुख इस बात का है कि मूल्यों, आदर्शों, विश्वास, नियम, आचार संहिता और संविधान आदि को टेढ़ी निगाह से देखा जा रहा है। मनुष्य अपनी जड़ों से उखड़ चुका है। वर्तमान में भारतीय राजनीतिक, आर्थिक एवं समाजिक व्यवस्था को खोखला करने में सबसे अधिक भूमिका निभा रहा है तो वह है– भ्रष्टाचार (करप्शन), जातिवाद (कास्टिज्म), और अपराधीकरण और इन सब की जड़ों में नैतिक पतन के कारण देश में राजनीति, आर्थिक एवं सामाजिक अंधकार सा छा गया है। राजनीति एवं राजनेता दोनों से जनता का विश्वास उठ गया है। मानव जीवन जीना दुभर हो गया है। राजनीति का अपराधीकरण और अपराधी का राजनीतिकरण एक सिक्के के दो पहलू बन चुके हैं। राजनीति में सब जायज है या चलता है कि मानसिकता झकझोर देती है। इस लेख में राजनीति में नैतिकता के ह्रास के प्रमुख कारणों और इसके गम्भीर परिणामों पर विचार किया गया है।

भारत अपने स्वतंत्रता संघर्ष की सफलता से उत्साहित होकर कर्णधारों ने अपने सपनों हेतु अपार आशाओं के साथ भारतीय संविधान का निमार्ण किया। विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र स्थापित करते हुए सोचा होगा अब मेरा देश वर्षों की परतंत्रता, सामाजिक विकृतियां तथा कुंठित मनोवृत्तियों से निकलकर ऐसी राह पर बढ़ेगा जहां अमन व शान्ति रहेगी लेकिन ऐसा न हो सका। वर्तमान भारतीय राजनीति की वास्तविकता यह है कि पूरा देश नैतिकताविहीन अपराध की राजनीति का गढ़ बनता जा रहा है। भारतीय राजनीति, अनैतिकता व अपराध, भ्रष्टाचार, घोटालों, सुविधाभोग का एक अखाड़ा बना गया है। भारतीय संस्कृति हमें नैतिकता का पाठ सिखाती है जिसको सीधी सबंध जन सेवा, सत्य, दया, परोपकार, पारदर्शिता और ईमानदारी से है। राजनीति का उद्देश्य जनहित में निर्णय लेना और समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण के लिए नीतियां बनाना होता है। यह सुनिश्चित करता है कि राजनेता और राजनीतिक दल अपने नैतिक मूल्यों का पालन करे, अपने पद का दुरूपयोग न करे और समाज कल्याण को सर्वोपरि रखे। भारत की राजनीतिक संस्कृति विश्व में बेजोड़ है। इस देश की महान विभूतियां– गाँधी, पटेल, जयप्रकाश नारायण, विनोवा भावे, लोहिया जैसे आदर्श एवं उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ दिए है। इन राजनीतिज्ञों की दृष्टि मानवीयता से ओत–प्रोत रही है। उनका चिन्तन सदैव सेवा, प्रेम, करूणा, नैतिकता, लोककल्याण, राष्ट्र उत्थान एवं राजनैतिक चेतना से भरपूर थी। वे चरित्र, संकल्प एवं कर्म व्यवहार के धनी थे। राजनीति व नैतिकता का सम्बन्ध अटूट होगा तभी लोकतंत्र और लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की जा सकती है। नैतिकता के आधार बिना राजनीति संवेदनहीन एवं शून्य हो जाती है। राजनीति

* सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान।

व नैतिकता का संबंध राजनीतिक जीवन नैतिक मूल्यों से ओत–प्रोत है, नीति और राजनीति लोक कल्याण का पर्याय है, धर्म व नीति राजनीति की जीवन रेखा है, राजनीति सत्य से विमुख नहीं होती, राजनीति सत्ता के लिए संघर्ष नहीं है, राजनीति में साधनों व साध्यों की पवित्रता आवश्यक है, राजनीति मानव सेवा एवं समाज कल्याण का आधार है।

भारतीय राजनीति के वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर नजर डालें तो स्थिति संकटमय है, भयावह है, अन्धकारमय है। भारतीय राजनीति जिस गति से अनैतिकता, दुराचरण और चारित्रिक विघटन का शिकार हुई है, वह देश का दुर्भाग्य है। आज सम्पूर्ण राजनीतिक तंत्र अनैतिकता की धारा में कैद है। राजनेताओं के कर्म और विचार, दोहरे आचरण, सत्ता की हवस, जोड़–तोड़, अवसरवाद, धार्मिक नाटकीयता और साम्प्रदायिक वैमनस्य से ग्रस्त है। उनकी विकृत सोच, भोग–लालसा, भ्रष्टाचार एवं अपराध की ओर बढ़ते कदमों ने सम्पूर्ण राजनीतिक चरित्र व संस्कृति पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। राजनेताओं के विलासी जीवन, पदलिप्सा, दोहरे मापदण्ड, निरीह नैतिक भाषणों तथा स्वार्थवादी संस्कृति आम आदमी के विश्वास को कंपित कर दिया है। चारों तरफ घोटाले ही घोटाले है। भ्रष्टाचार व दुराचार को कहीं अनैतिक नहीं माना गया है। राजनीति मे फैली अनैतिकताओं के कारण प्रजातंत्र कांप रहा है। प्रजातंत्र लूला, लंगड़ा, अंधा–बहरा और घिनौना लगने लगा है। राजनीति दल, दल नहीं रहे दलदल बन गए हैं। राजनीति में बढ़ती अवसरवादिता, सौदेबाजी, स्वार्थ, अपराधिक गठजोड़, तुष्टिकरण की नीति, चुनावी राजनीति, अलगाववादी प्रवृत्ति, सांप्रदायिकता, सत्ता लोलुपता, राजनीतिक पाखण्ड, चरित्रहीनता व दल–बदल, सिद्धान्तहीनता एवं वैचारिक अपरिपक्तता ने देश के राजनैतिक परिदृश्य को चिन्ताजनक बना दिया है। भारतीय राजनीति आज अपने निकृष्टतम बिन्दू पर है व सोचने को मजबूर करती है। भारतीय राजनीति विचार शून्यता एवं मूल्यहीनता की शिकार है। आज भारतीय राजनीति के जंगल में बड़े–बड़े शेर, हाथी, घोड़े, चालाक लोमड़ियां, चतुर खरगोश, सुस्त कछुए, विषधर साँप, फुर्तीले नेवले और गधे मौजूद है।

ननी ए. पालकीवाला के शब्दों में– मैं नहीं सोचता कि भारत वर्ष अपने पांच हजार वर्ष के इतिहास में कभी अधोगति की ऐसा स्थिति में पहुंचा, जिस स्थिति में वह आज पहुंच गया है..... आज महान राष्ट्र नैतिक पतन से ग्रस्त है जिसके अनेक लघु प्रतिबिम्बों में तीन है– अपराध, घोर अव्यवस्था और भ्रष्टाचार।

इन नैतिक पतन के कारण भारतीय राजनीति में जो प्रवृत्तियां उभर रही है वे है–

- राजनीति का अपराधीकरण से राजनीति में गुण्डे, माफिया एवं हत्यारे आ गए है, वे संसद व विधानसभा में आकर राजनीतिज्ञ बन गए है। राजनेता, नौकरशाह, उद्योगपति और माफिया का गठबंधन मिलकर समानान्तर सरकार बना ली है और कानून व व्यवस्था की धज्जियां उड़ा रहे हैं।
- घोटाले, घपलों और भ्रष्टाचार में डूबी राजनीति आज अनेक बड़े–बड़े घोटालों वं भ्रष्टाचार के उदाहरण खुले है।
- सुविधा, भोग, बद खर्चियों पर पलते सांसद, विधायक जो बिना काम किए मौज करते हैं। यहां तक कई तो संसद में आते तक नहीं, वे बड़े–बड़े वेतन व सुविधाएं भोग रहे हैं।
- राजनीति को व्यवसाय या पेशा समझने लगे जो जनता की सेवा की जगह अपने निजी लाभ के लिए काम करते हैं।
- आज रीढ़विहीन राजनीति हो गई है जिसकी वजह से कोई ठोस नीति नहीं होने से राजनीति दिशाविहीन हो गई है।
- आज समूची व्यवस्था भ्रष्टाचार के समुद्र में डूबी हुई है। राजनेताओं, नौकरशाही और अन्य सत्ता प्रतिष्ठानों में व्याप्त भ्रष्टाचार की बढ़ती विष बेल नैतिक संकट का स्पष्ट प्रमाण है।
- अवसरवादी गठबंधन, दलबदल तथा राजनीतिक मुर्गबाजी की राजनीति आजकल इन दिनों ज्याद ही देखने को मिलते हैं। बेमेल व सिद्धान्तविहीन दलबंदी ही भ्रष्टाचार की गंगोत्री है।

- चुनावों में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार एवं अपव्यय नैतिकता की हदें पार कर दी है। चुनाव में बेहिसाब खर्चे एवं येन–केन–प्रकारेण चुनाव जीतना मुख्य उद्देश्य हो गया है।
- सत्ता में सब जायज है, या राजनीति में सब चलता है की प्रवृत्ति शर्मनाक है।
- राष्ट्रीय राजनीति का अभाव देखने को मिलता है। एक–दूसरे के विरोधी व विवादों के उपरान्त भी राष्ट्रीय स्तर पर बेमेल राष्ट्रीय मंच बना कर देश की राजनीति का सपना देखते हैं।
- सत्ता लोलुपता के कारण दलों में ऐसे समझौते किए जाते हैं जिनमें सिद्धांतों व नैतिकता की बलि दी जाती है।
- प्रतिशोध की राजनीति और बदले की सियासत एक घिनौना खेल खेलते हैं जिससे जनता का राजनीति एवं राजनेताओं से विश्वास उठ रहा है।
- लक्ष्यविहीन एवं अवसरवादी राजनीति देश व राजनीति को दिशाहीन की ओर ले जाती है।
- राजनीति में आने के लिए नैतिकता को ताक में रखकर किसी भी प्रकार के साधनों को अपनाने पर तत्पर रहते हैं। साध्य और साधनों की पवित्रता नहीं रही है।
- जाति, धर्म, सम्प्रदाय की राजनीति ने खतरनाक मोड़ ने लिया है। जाति और साम्प्रदायिकता की राजनीति हमारी जनतंत्रीय व्यवस्था की कोख में एक कैंसर की गांठ है जो सारी व्यवस्था के शरीर को जर्जर कर रही है। आज मंदिर–मस्जिद निर्माण, त्रिशुल धारण, राम रोटी, पूजा अर्चना के नाम पर राजनीति हो रही है। परिणाम स्वरूप हिंसात्मक प्रवृतियां बढ़ती जा रही है।
- विचारधारा रहित राजनीति एवं सिद्धांतहीनता की राजनीति आगे बढ़ रही है जिसका लक्ष्य क्या है किसे मालुम?
- संसद, सांसद का गिरता स्तर देश के लिए चिन्ता का विषय है। वर्तमान संसद की कार्यवाही में हो रही धक्का–मुक्की, गाली–गलौच, लैम्प, टेबल–कुर्सी फेंकना, कपड़े फाड़ना आदि नैतिक मूल्यों का पतन ही है। संसद की आचार संहिता का उल्लंघन धड़ल्ले से हो रहा है।
- लोकतंत्र, आजादी और संवैधानिक प्रावधानों का मजाक बनाना कहां की नैतिकता है? लोकतंत्र खतरे में है, संविधान खतरे में इस प्रकार की अफवाह फैलाना मानसिक दिवालीयापन ही हो सकता है।
- सिद्धांतों व नैतिकता के स्थान पर आज व्यक्ति–पूजा की प्रवृति हावी है।
- राज्यों की राजनीति में राज्यपाल के पद का भी नैतिक पतन हो रहा है केन्द्र सरकार अपने हितों के अनुकूल राज्यपाल के पद का दुरूपयोग कर रही है।
- देश की राजनीति के विकृत स्वरूप के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारण देश के नेतृत्व, राजनीतिक दलों एवं राजनीतिज्ञों में राष्ट्रवादी चिन्तन का अभाव होना भी है।
- हमारे देश में राजनीतिक अपराधों एवं भ्रष्टाचारों के मामले में कानून एवं न्याय व्यवस्था बहुत ही लचर एवं अप्रभावी रही है।
- राजनीतिक विकास की दिशा में यह कैसे सम्भव है कि हम राजनेताओं से तो सद्चरित्र की उम्मीद कर और नागरिक स्वयं अनैतिकता की राह पर चलने की आकांक्षा पाल रहे। जब स्वयं ही सुषुप्त, चेतनहीन और दायित्वों से विमुख होकर सोये रहते हैं तो राजनेता को स्वेच्छाचारी ढंग से कार्य करने का अवसर मिल जाता है इसलिए नागरिकों को सतत् जागरूक रहना पड़ेगा।

और भी अनेक कारण है जैसे– आदर्शों से जुड़े राष्ट्रर्पित आचरण का अभाव, राजनीतिज्ञों की स्वतंत्र सोच एवं सिद्धांतों का अभाव, परम्पराओं और आधुनिकता में परस्पर विरोध की नीति तुष्टिकरण की नति, राजनीति में सत्ता के लिए बढ़ती प्रतिस्पर्धा, भारतीय समाज में नैतिकता के गिरते मानदण्ड, व्यक्तियों में धन अर्जन करने की विवशता, जनता की दरिद्रता व अशिक्षा, महिलाओं की राजनीति में नगण्य भूमिका, सत्ता पाने की अतृप्त लालसा, भोगवादी प्रवृति आदि।

सुधार के सुझाव

राजनीति और नैतिकता का संबंध अत्यंत गहरा है और नैतिकता के बिना राजनीति अधूरी है। वर्तमान राजनीति परिदृश्य में, जहां नैतिकता का अभाव स्पष्ट है, जनता का विश्वास राजनीति से हटता जा रहा है। आज के युग में हमारी संस्कृति के बीच अदृश्य टूटन–सी आ गई है। मूल्यों का क्षरण हो रहा है। मानवीय उद्देश्यों में बिखराव आ रहा है। अच्छाई–बुराई, उचित–अनुचित के मध्य का विभेद मिट सा गया है। मनुष्य अपेन गिरते हुए आचरण के कारण मानवीय स्तर से नीचे जा रहा है। प्रो. एल.एस.राठौड़ ने लिखा– ''इसका प्रमुख कारण हमारे व्यक्तिगत, राजनीतिक और सामाजिक आदर्शों का पतन है।'' आज हमें नैतिक मूल्यों के बिखराव को रोकने की आवश्यकता है वस्तुतः मूल्य कभी बिखरते नहीं बिखरती हमारी चेतना, जब हमारी चेतना भ्रमित होती है तब राजनीतिक सोच का अवमूल्यन होता है। लोकतंत्र की अस्मिता भ्रष्ट एवं कलंकित हो जाती है नैतिक मूल्य चूँकि भारतीय लोकतंत्र की धूरी है। अतः इन मूल्यों को पुनःजीवन्त बनाकर इसकी पुनः प्रतिष्ठ करना ही हम सब भारतीयों का कर्तव्य है।

भारतीय राजनीति में उत्पन्न बुराईयों, अनीतिगत आचरण, व्यवहारवादी विकृतियों एवं राजनीतिक व्यवस्था के सुधार हेतु कुछ सुझाव

- **राजनीतिक भ्रष्टाचार से दूरी–** भ्रष्टाचार राजनीति में नैतिकता की सबसे बड़ी चुनौति है। राजनीतिक व्यवस्था का संचालन करने वाले राजनेताओं, नौरशाही और अन्य सत्ता प्रतिष्ठानों में व्याप्त भ्रष्टाचार की बढ़ती विष बेल को जड़ से उखड़ना होगा। भ्रष्टाचार के ब्रह्म राक्षस पर नखेल कसनी पड़ेगी। जनता को सच्चे एवं ईमानदार नेताओं का समर्थन करना चाहिए।
- राजनीति के अपराधीकरण पर अंकुश लगाना चाहिए। अपराधिक गतिविधियों में संलग्न व्यक्तियों के चुनाव लड़ने पर कानूनी रोक की व्यवस्था होनी चाहिए। राजनीतिक दलों में चेतना जागृत की जानी चाहिए ताकि वे अपराधियों (जिन पर भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, हत्याएं, दंगों जैसे अपराधिक मामले, धार्मिक उन्माद फैलाने के आरोप, फिरौती, आय से अधिक सम्पत्ति के आरोपी) को अपने साथ न जोड़े तथा उन्हें टिकट न दे।
- चुनाव प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता है। चुनावी प्रक्रियाओं में पाददर्शिता लाने, धन–बल और बाहुबल के इस्तेमाल पर रोक लगाने और भ्रष्टाचार के खिलाफ सख्त कदम उठाने से स्थिति में सुधार हो सकता है।
- सजग एवं जागरूक चैतन्य नागरिकों का होना आवश्यक है। जो सकारात्मक सोच, राष्ट्रप्रेम व संवेदनशील भावनाएं होगी तभी सच्चा लोकतंत्र स्थापित हो सकता है जिसमें प्रेम, दया, सौहार्द्र, सहानुभूति, भाई–चारा के साथ सबका कल्याण हो सकता है।
- पारदर्शी और निष्पक्ष मीडिया से राजनीति में नैतिकता की वापसी तभी सम्भव है जब पारदर्शिता और जबावदेही को बढ़ावा दिया जाए। भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरूपयोग को रोकने के लिए सख्त कानून और तंत्र की आवश्यकता है। मीडिया जनता के सामने सच्चाई रखे जिससे राजनेताओं पर दबाव बने ताकि कोई गलत काम न करें।

- कानूनी व्यवस्था और न्याय व्यवस्था में अत्यधिक महत्वपूर्ण सुधारों की आवश्यकता है। कानून सख्त एवं शीघ्र न्याय मिले जिससे अपराधियों पर नियंत्रण रखा जा सके। न्यायधीश अपराधियों के दबाव में न आये, सही व शीघ्र निर्णय सुनाये।
- शिक्षा और जागरूकता– समाज में नैतिक राजनीति के लिए जनता को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। नैतिक एवं शिक्षित नागरिक ही नैतिक नेतृत्व का चुनाव कर सकते हैं। परोपकार सेवा दया, सहयोग, सहिष्णुता, ईमानदारी, समाजसेवा, राष्ट्र सर्वोपरि का राजनेताओं व नागरिकों को शिक्षित किया जाय।
- राजनीति का आधार धर्म एवं नैतिकता होना चाहिए। धर्म ही व्यक्ति को संवेदनशील, सेवानिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, सेवाप्रवृत्त एवं त्यागशील बनाता है जो व्यक्ति सदैव दूसरों के लिए जीता है।
- भारतीय राजनीति में नैतिकता के विकास के लिए अनेक सुझाव दे सकते हैं जैसे– राजनीतिक ढांचे में मूलभूत परिवर्तन करना, सिद्धान्त युक्त राजनीति अपनाना, पारदर्शिता, जांच एवं संसद की निगरानी, लोकमत का परिष्कार, क्षेत्रवाद की राजनीति पर अंकुश, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, जन सहभागिता को बढ़ावा, राजनीतिज्ञों के लिए आचार संहिता, राजनीति को लोकसेवा बनाना, हमारी संस्कृति की जड़ें मजबूत हो, लोकतांत्रिक मन का विकास हो, साध्य व साधन की पवित्रता पर बल, व्यक्ति की महत्ता सर्वोपरि हो, साध्य व साधन की पवित्रता पर बल, व्यक्ति की पूजा की जगह काम का सम्मान, सजग एवं जागरूक नागरिक, मीडिया की पाददर्शिता एवं निष्पक्ष भूमिका भारतीय राजनीति में नैतिकता को महत्वपूर्ण स्थान दिला सकता है।

निष्कर्ष

राजनीति नैतिकता के आधार के बिना मृत एवं संवेदनहीन हो जाती है। अतः राजनीति के प्रत्येक क्षेत्र में नीति की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। नैतिकता के बिना जीवन मूल्य और जीवन दोनों ही असुरक्षित है। राजनीति सत्ता के लिए संघर्ष नहीं है, राजनीति कर्म प्रेरित है, नीति राजनीति की चेतना है, धर्म व नीति, राजनीति की जीवनरेखा है, राजनीति में साधनों एवं साध्यों की पवित्रता आवश्यक है, राजनीति मानव सेवा एवं समाज कल्याण का आधार है, नीति और राजनीति लोककल्याण का पर्याय है, राजनीति मानव मूल्यों की निर्धारक है, राजनीतिक जीवन नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत है।

आज देश की मौजूदा राजनीति का परिदृश्य अराजक है तथा राजनीति मूल्यहीनता ने लोकतंत्र के प्रति अनेक सवाल खड़े कर दिए हैं। इम्मेनुअल कांट के विचार प्रासंसिक है कि– ''कोई भी राजनीतिक सिद्धांत आदर्श तथा नैतिकता को नमन किये बिना कभी आगे बढ़ ही नहीं सकते।'' नैतिक मूल्य तो सदा प्रासंगिक रहेंगे और उसका औचित्य हमेशा बना रहेगा। नैतिक मूल्य शाश्वत है, सर्वेदेशिक है, सर्वकालिक है। इतिहास साक्षी है– जब कभी नैतिक मूल्यों के महत्व को नकारा गया है, समाज व देश पतन की ओर अग्रसर हुआ है। आज हम सब नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि समाज एवं राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे। नैतिक उत्थान के लिए नैतिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार, नागरिकों की सतत् जागरूकता, प्रेस एवं मीडिया, राजनेता, न्यायपालिका, व्यवस्थापिका को मिलकर एक जन आन्दोलन खड़ा करना पड़ेगा तभी इस अनैतिकता की गम्भीर समस्या को दफना सकते हैं। जॉन ऑफ केनेड़ी की उस नसीहत को ध्यान रखना होगा कि ''जब सूरज निकला हो तभी अपनी छत ठीक कर लेनी चाहिए, बहुत देर हो चुकी है फिर भी कभी नहीं से अभी बेहतर है।''

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. संगतसिंह, 'भारतीय राजनीति में नैतिक संकट' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
2. डॉ. रूपा मंगलानी, 'भारतीय शासन एवं राजनीति, जयपुर
3. डॉ. एस.सी.सिंहल, 'भारतीय शासन एवं राजनीति, प्रकाशक लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा

4. गाँधी, ए.के, 'नीति एवं दर्शन' इलाहाबाद, गाँधी साहित्य प्रकाशन, 1968
5. कर्पूरचन्द कुलिश, 'भारत में नैतिकता का अवमूल्यन' राजस्थान पत्रिका, 23 दिसम्बर 1993
6. डॉ. उम्मेद सिंह इन्दा, 'भारतीय राजनीति में आचार संहिता' राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
7. गजेन्द्र सिंह, 'राजव्यवस्था में नैतिकता का संकट' आलेख
8. दीनदयाल वर्मा, 'भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में नैतिक मूल्यों का क्षरण' आलेख
9. डॉ. सर्वेश्वर उपाध्याय, 'लोकतंत्र की खण्डित होती गरिमा उठते सवाल'
10. डॉ. मन्जू लाडला, 'भारतीय राजनीति में नैतिक अवमूल्यन : उभरती प्रवृत्तियां
11. डॉ. गजेन्द्रसिंह राठौड़, :भारतीय राजनीति में नैतिक संकट' आलेख
12. राठौड़, एल.एस., 'राजनीति और नैतिकता : प्रगति मंजूषा, इलाहाबाद
13. डॉ. नन्दलाल, 'राजनीति और नैतिकता, बौद्धिक शैलिया, नई दिल्ली
14. डॉ. अनुपमा टेलर, 'राजनीति में नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता; आलेख
15. डॉ. राजीव चौहान, 'राजनीति में आचार–संहिता : आदर्श व यथार्थ
16. डॉ. लक्ष्मीनारायण जोशी, 'राजनीति और भ्रष्टाचार

❖◆❖